IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed(Group –I) Journal Volume 11, Spl Iss 07, July 2022

प्राचीन भारतीय इतिहास में चिकित्सा पद्धति सैन्धव सभ्यता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

जगदीश कुमार
शोधार्थी (इतिहास)
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर

डॉ0 प्रमोद कुमार
सहायक आचार्य(इतिहास विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर

परिचयात्मक शोध की भूमिका

भारत की संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है हिमालय पर्वत के दक्षिण तथा हिन्द महासागर के उत्तर में स्थित भूभाग भारत के नाम से जाना जाता है। जो एशिया महाद्वीप के दक्षिण भाग में है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विश्व का सातवां बड़ा देश है। इसका क्षेत्रफल 32, 87, 263 वर्ग किमी0 है। इसकी आकृति चतुष्कोणीय है। इसके पूर्व में इण्डोचीन प्रायद्वीप व पश्चिम में अरब प्रायद्वीप है। भारत अक्षांशीय दृष्टि से उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है तथा देशांतरीय दृष्टि से पूर्वी गोलार्द्ध के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। समूचा भारत लगभग मानसूनी जलवायु वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। इस देश का विस्तार उत्तर–दक्षिण दिशा में 3214 किमी0 तथा पूर्व–पश्चिम दिशा में 2933 किमी0 है। यह भूमध्य रेखा के उत्तर में $8^0 4'$ से $37^0 6'$ उत्तरी अक्षांशो तथा $68^0 7'$ से $97^0 25'$ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। $82^0 ½$पूर्वी देशान्तर रेखा इसके लगभग मध्य से (इलाहाबाद के नैनी से) होकर गुजरती है। कर्क रेखा भारत के मध्य से गुजरती है। भारत की स्थलीय सीमा पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर–पश्चिम में अफगानिस्तान, उत्तर में चीन और नेपाल, उ0 पू0 में भूटान तथा पूर्व में बांग्लादेश एवं म्यांमार देशों से लगी हुई है। श्रीलकां भी भारत का पड़ोसी देश है जो हिन्द महासागर में पाक जलसंधि द्वारा भारत की मुख्य भूमि से अलग है।

इसकी विशालता के कारण ही इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा दी गई है। प्राचीन भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से आज के भारत के अपेक्षा कही ज्यादा बड़ा था। भारत विश्व का अकेला ऐसा देश है जिसका नाम हिन्द महासागर से जुड़ा है। प्राचीन काल में इस देश को भारतवर्ष के नाम से जाना जाता था। विष्णु पुराण में कहा गया है कि–

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम।
वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः।।

अर्थात् समुद्र के उत्तर में तथा हिमालय के दक्षिण में जो है वह भारत देश है तथा यहाँ उत्पन्न लोगों को भारतीय कहा जाता है। मत्स्य पुराण की एक अनश्रुति में 'प्रज्ञाओं' का भरण–पोषण करने और उन्हें जन्म देने के कारण, मनु को (जो आदि प्रजापति तथा धर्म और न्याय के व्यवस्थापक थे) भरत तथा जिस भूभाग पर मनु की व्यवस्था प्रचलित थी उसे भारतवर्ष कहा है। भागवत् और जैनियों की परम्परा के अनुसार भगवान ऋषभदेव के पुत्रों में सबसे ज्येष्ठ भरत सर्वश्रेष्ठ गुणवाला तथा महायोगी था; उसी के नाम से इस देश को भारत वर्ष कहते है। प्रसिद्ध इतिहासकार डा0 राजबली पाण्डेय का मानना है कि ''वैदिक आर्यों की भरत जाति के नाम पर इस देश का नाम भारत वर्ष पड़ा। यह जाति अपने समय की राजनितिक शक्ति और वैदिक साहित्य तथा सभ्यता के विकास में अग्रणी थी इसलिए यह सारे देश के आदर्श और भारतीयता का घोतक हो गई। इसके द्वारा फैलाई गयी संस्कृति से प्रभावित सारे देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा।''

ईरानियों ने सर्वप्रथम 'सिन्धु नदी' तथा उसकी सहायक नदियों के आस–पास बसने वाले लोगों को हिन्दू' तथा उनके देश को 'हिन्दुस्तान' कहा था। जब भारत में मुस्लिमों का शासन स्थापित हुआ, तब यह नाम और प्रचलित हो गया। इन्होनें 'हिन्दु–धर्म' कहा। मुस्लिमों ने अपने धर्म 'इस्लाम धर्म' की प्राचीनता 'हिन्दु धर्म' से पहले सिद्ध करने के लिए हिन्दु धर्म पर अनके कुठाराघात किये। जब अंग्रेजों का शासन भारत पर स्थापित हुआ, तब अंग्रेजों ने भी हिन्दु धर्म से अपने 'ईसाई धर्म' को श्रेष्ठ तथा प्राचीन बताया। परन्तु जब हम प्राचीन भारतीय इतिहास के अनेक स्त्रोतों का अध्ययन करते है तो पता चलता है कि 'हिन्दु धर्म' कोई धर्म नही था। जिस धर्म को ईरानियों ने हिन्दू–धर्म का नाम दिया वह सनातन धर्म था, जिसका आदि ज्ञात करना असंभव है। ईरानी 'स' को 'ह' उच्चारित करते थे। इसी कारण उन्होनें सिन्धु' को हिन्दु कहा। भारतवर्ष का 'इण्डिया' नाम यूनानियों का दिया हुआ है। यूरोपीय लोग भी इस देश को 'इण्डिया नाम' से पुकारते थे। प्रथम शताब्दी ई0 में चीन में बौद्ध धर्म के प्रवेश होने पर चीनियों ने भारत के लिए 'तिएन–चू' या चु–आंतु' शब्द का प्रयोग किया।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

परिचयात्मक शोध के सोपान

इस सभ्यता के सर्वप्रथम खोज किये गये पुरास्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ो पाकिस्तान में स्थित है। हड़प्पा नामक पुरास्थल पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के साहिबाल जिले में रावी नदी के बाएँ किनारे पर स्थित है, तथा मोहनजोदड़ों नामक पुरास्थल सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दाहिने तट पर स्थित है। अभी तक के हुए पुरातात्विक खोजों में इस सभ्यता के सबसे अधिक पुरास्थल भारत में मिले है। इस सभ्यता का विस्तार उत्तर में भारत के जम्मू प्रदेशों से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र तक तथा उ0 पू0 में मेरठ से लेकर पश्चिम में ब्लूचिस्तान के मकरान समुद्रतट तक मिलता है।

परिचयात्मक शोध का महत्त्व

इस सभ्यता के सर्वप्रथम खोज किये गये पुरास्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ो पाकिस्तान में स्थित है। हड़प्पा नामक पुरास्थल पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के साहिबाल जिले में रावी नदी के बाएँ किनारे पर स्थित है, तथा मोहनजोदड़ों नामक पुरास्थल सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दाहिने तट पर स्थित है। अभी तक के हुए पुरातात्विक खोजों में इस सभ्यता के सबसे अधिक पुरास्थल भारत में मिले है। इस सभ्यता का विस्तार उत्तर में भारत के जम्मू प्रदेशों से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र तक तथा उ0 पू0 में मेरठ से लेकर पश्चिम में ब्लूचिस्तान के मकरान समुद्रतट तक मिलता है।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

1. सभ्यता में आयुर्वेदिक चिकित्सा का विकास हुआ था। यह चिकित्सा पद्धति प्राकृतिक उपचारों और औषधियों पर आधारित होती है इसको दर्शाना है।
2. चिकित्सा पद्धति विभिन्न रोगों के उपचार में प्रयोग होती हैं। इसका स्पष्टकरण करना।
3. आयुर्वेद में रोग के कारणों को जानकर, रोग प्रतिकारक को बढ़ाने और रोगी की स्वास्थ्य को सुधारने के उपाय के बारे में बताया जाना।

परिचयात्मक शोध का निष्कर्ष

'चिकित्सकों की ज्ञान प्राप्ति': सैंधव समाज में विशेष रूप से पशुओं के उपचार में विशेषज्ञता होती थी। उनके पास चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष ज्ञान और

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

कौशल होते थे जो पशुओं के रोगों को सही ढंग से समझने और उनका उपचार करने में मदद करते थे।

इन सभी तत्वों से समझा जा सकता है कि सैंधव सभ्यता ने पशु चिकित्सा के क्षेत्र में विकसित और प्राचीन चिकित्सा विज्ञान का उपयोग किया था, जो उनके समाज के सदस्यों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद)
2. चाणक्य अर्थशास्त्र
3. चरक चरक संहिता
4. वाग्भट अष्टांग हृदय अष्टांग संग्रह
5. सुश्रुत सुश्रुत संहिता
6. धनवंतरी – निघंटु
7. शालिहोत्रा शालिहोत्रा संहिता
8. पांडुलिपियां
9. पाणिनि अष्टाध्यायी
10. पतंजलि महाभाष्य